Renu Bala al. International Journal of Recent Research Aspects ISSN: 2349-7688, Vol. 1, Issue 2, September 2014, pp. 226-230

नारी दशा. अतीत एवं वर्तमान

रेणु बाला

हिन्दी विभाग, कुरुक्षेत्र यूनिवर्सिटी कुरुक्षेत्र

सारांश: **मानव समाज के विकास के प्रारम्भ में स्त्री.पुरुष को सृष्टि के विकास की दो इकाइयो के रूप में देखा गया। फिर भी उन दो स्तम्भों में से किसी एक को ज्यादा महत्व देना और किसी एक को किनारे कर देना पुरुष सत्तात्मक मानसिकता की ही उपज है। सदियों से नारी का रूप समय के साथ बदलता आया है। कभी उसे देवी का दर्जा दिया गया तो कभी दासी का। अतीत से लेकर वर्तमान तक नारी की दशा परिवर्तित होती रही है लेकिन बाह्य और आन्तरिक तौर पर वह अब भी वहीं की वहीं है। आधुनिक युग में स्त्री.विमर्श द्वारा स्त्री की दशा सुधारने का प्रयास हो रहा है। आज उसे आत्म.सम्मान के लिए खड़ा होना पड़ा है। उसे अपनी स्वतंत्रता तथा अस्मिता का निर्णय स्वयं करना चाहिए। आज के विज्ञान और टेक्नोलॉजी के युग में स्त्री का स्थान जानना आवश्यक है।**

मुख्य विषय. **नारी वैदिक युग मध्यकाल आधुनिक काल**

सदियों से भारतीय समाज में नारी के स्थान को लेकर कई सवाल उठते रहे हैं नारी का अतीत कैसा थाए वर्तमान कैसा है तथा भविष्य कैसा होगाद यह सब विचारणीय प्रश्न है। समय.समय पर स्त्री की मानसिकता और शारीरिक स्वतंत्रता के प्रश्न सामने आते रहे है। आज का प्रगतिशील समाज निरन्तर विकास कर रहा हैए किन्तु उसमें स्त्री की भागीदारी संदेहपूर्ण है। पितृ प्रधान सामाजिक व्यवस्था में एक बात स्पष्ट है कि एक ही परिवार के पुरुष और स्त्री में पुरुष के लिए उसका धर्मए वर्ण या जाति जितनी सुनिश्चितए स्थायी और सर्वमान्य हैए स्त्री के लिए उतनी ही अनिश्चितए अस्थायी और विवादास्पद।

वैदिक काल रू ऐतिहासिक दृष्टि से नारी जीवन पर दृष्टिपात किया जाए तो स्पष्ट है कि केवल वैदिक युग ही ऐसा स्वर्णिम युग हैए जिसमें नारी को सम्मान की दृष्टि से देखा गया था। उस समय शास्त्र पढ़ने का अधिकार था। वह शास्त्रार्थ करने में निपुण थी। वह राजनीति में भाग लेती थी। वह प्रेम और विवाह के क्षेत्र में भी पूर्ण रूप से स्वतंत्र थीं ष्ऋग्वेद में भी कई ऋषिकाओं के नाम मिलते हैए जिन्होंने सूक्तों या मंत्रों की रचना की है। स्त्रियों को नृत्यगान की भी शिक्षा दी जाती थी क्योंकि ये कलाएं पुरूषों के योग्य नहीं मानी जाती थी।ष1

उत्तर वैदिक काल

उत्तर वैदिक काल में स्त्री को नगण्य समझकर उसे अपमानित और प्रतिबन्धित किया जाने लगा। तैत्तिरय ब्राह्मण में स्त्रियों की दुरात्मा पुरुषों से भी हीन बताया गया। उत्तर वैदिक काल में रामायण और महाभारत जैसे महाकाव्यों में स्त्री शोषण के प्रसंग भरे पड़े है। अहल्या को इन्द्र ने अपनी वासना का शिकार बनाया तो गौतम द्वारा शापित किया गया। सीता और द्रौपदी को भी अपमान सहना पड़ा। मंदोदरीए सुलोचना जैसी स्त्रियों को पति का हर कर्म सहना पड़ा। रावण द्वारा सीता को प्रताड़ित किया गया। राम ने उसकी अग्नि परीक्षा ली। मर्यादा पुरूषोत्तम राम ने समाज की मर्यादा हेतु सीता का त्याग किया। द्रौपदी को पाँच पतियों की पत्नी बनने पर विवश होना पड़ा। स्त्री को वस्तु समझकर जुए के दाँव पर लगाया गया। भरी सभा में द्रौपदी को अपमान भोगना पड़ा। ष्भीम ने भगवान से यह वरदान माँगा कि पाण्डव कुल में स्त्री का जन्म न हो ताकि हमें किसी के सामने झुकना न पड़ेंष2

© 2014 IJRRA All Rights Reserved

बौद्ध तथा जैन काल

इसके बाद बौद्ध काल तथा जैन साहित्य में भी मेधावी एवं शिक्षित स्त्रियों के नाम मिलते हैं लेकिन ष्उस समय के अन्य विश्वविद्यालयों जैसे किए विक्रमशिलाए वलमीए आवस्त्रीए तक्षशिलाए पाटलिपुत्रए कन्नौज आदि में भी स्त्री विद्यार्थियों का उल्लेख नहीं मिलता।ष्3

मध्यकाल

अतः प्राचीन समय में ही नहीं अपितु मध्य काल में तो स्त्रियों की स्थिति में और भी अधिक गिरावट आई। समय के साथ स्त्रियों में चेतना जागी तो वे भी अपने मान.सम्मान की रक्षा और अपने अधिकारों के लिए आगे आई तथा अनेक कष्टों का सामना भी किया। 13वीं शताब्दी में खासकर उत्तर भारत में फैली भक्ति आन्दोलन की उदात्त लहर ने अपने प्रवाह में मध्यकालीन समाज में व्याप्तए वर्णए जातिए धर्मए लिंग.भेद के बंधनों को बिखेर दिया। उस समय नारी को घर की चारदीवारी में बंद कर विलास की वस्तुमात्र बना दिया गया। ष्गाँव के छोटे से जमींदार से लेकर राजा.महाराजा तक में अनेक नारियों को पाने की इच्छा बलबती हो गई थी।ष्4 उस समय बाल.विवाह तथा पर्दा.प्रथा का प्रचलन बढ़ने लगा तथा विधवा.विवाह पर रोक के कारण नारी आजीवन अछूत की तरह जीती थी।3 कबीर जैसे संत ने नारी के कामिनी रूप की ज्यादातर निंदा ही की है तथा पतिव्रता नारी की प्रंशसा भी की है।

ष्नारी कुंड नरक काए बिरला थंमै बाग।ष्5

ष्कबीर की तरह तुलसी भी स्त्री को अवगुणों की खान और बुराईयों की जड़ समझते है।ष्6

एक जगह तो तुलसीदास ने स्त्री को पशु के समकक्ष रख दिया और उसे निरन्तर धिक्कारने के लायक ही बता दिया।

ष्ढोलए गंवारए शुद्रए पशुए नारी।

ये सब ताड़ने के अधिकारी।।7

स्ूरदास कृत ष्सूरसागरष् में केवल एक जगह पर सती प्रथा का उल्लेख मिलता है। वहाँ भी उस प्रथा की भर्त्सना ही है।

ष्देख जरनिए जड़ नारि की ;रेद्ध जरति प्रेम के संग।

चिता न चित फीकौ भयौ ;रेद्ध रची जु पियके रंग।

लोक वेद बरजत सबैए ;रेद्ध देखत नैननि त्रास।ष्8

संक्षेपत रू यह कहा जा सकता है कि निर्गुण संतोंए सूफियों से लेकर सगुण भक्त कवियों तक ने नारी.निंदा में कोई कसर नहीं छोड़ी है।

मध्यकालीन नारी विरोधी समाज में मीराबाई अकेली ही ऐसी स्त्री हुईए जिसने अद्भुत साहस दिखाकर सामाजिक रूढ़ियों और पारिवारिक मान्यताओं को तिलांजलि देकर स्वतंत्रता को अपनाया। मीरा बाल.विवाह का शिकार हुई तथा सात.आठ साल बाद ही विधवा हो गई। लेकिन वह अपने पति राजकुमार भोजराज के शव के साथ न तो सती हुई और न विधवाओं की तरह अन्त्यज बनकर रहने को तैयार थी। सती होना या विधवाओं की

© 2014 IJRRA All Rights Reserved

तरह कष्टपूर्ण जीवन जीना उसे नारी विरोधी प्रवृत्तियाँ लगती थी। इसलिए उसने मेवाड़ के महाशक्तिशाली राणा की परवाह किए बिना समाज में घुलना.मिलनाए सन्तों के साथ नाचना.गाना और दिन.रात ईश्वर.भक्ति में लीन रहने के अपनी दिनचर्या चुना। राणा जी ने पारिवारिक मर्यादा तोड़े जाने पर अपनी पुत्रवधू को अवश्य प्रताड़ित किया होगा। विक्रमादित्यए मीरा की सास तथा ननद ने भी उसे बहुत सताया। मीरा ने अपनी रचनाओं के माध्यम से सब कुछ बयान किया।

ष्पग घुंघरू बाँध मीरा नाची रे।

लोक कह्या मीरा भई बाबरीए सासु कहयाँ कुलनासी रे।ष्9

मीरा ने पर्दा.प्रथा का भी विरोध किया। अपने पति की मृत्यु के बाद वह बिना परदे के साधुओं संग घूमती थी तथा गिरधर नागर के भजन में लीन रहती थी।

ष्राणा जी अब न रहूँगी तोरी हटकी

साधु संग मोहि प्यारा लागेए लाज गई घूँघट की।ष10

कह सकते है कि जातिए कुल मर्यादाए रीति.रिवाजए रूढ़ियाँए परम्पराएँए लिंग.भेदए आदि सब बन्धनों को मीरा ने तिलांजलि दे दी थीं। नारी मात्र के लिए भक्तिकाल में यह क्रान्तिकारी कदम था। मीरा ने एक ऐसे समाज की परिकल्पना की थीए जिसमें स्त्री पुरूष सब समान हो। वास्तव में मीरा अपने समय से आगे सोचने वाली एक युगद्रष्टा नारी थी।

आधुनिक काल

आधुनिक युग में भी नारी की स्थिति में सुधार नहीं है। आधुनिक हिन्दी साहित्य में करीब डेढ़.दो दशकों से स्त्री विमर्श पर काफी चर्चाए हो रही है। बीसवी सदी के दूसरे व तीसरे दशक से स्त्री शोषण एवं उत्पीड़न को लेकर बहुत कुछ लिखा गया है। अकेले प्रेमचन्द्र ने ही अनेक कहानियों और उपन्यासों में स्त्री शोषण एवं उत्पीड़न की मार्मिक अभिव्यंजना की है। प्रेमचन्द्र के उपन्यास ष्गोदानष में होरी द्वारा अनमेल विवाह पर अपनी बेटियों का सौदा करने तथा विधवा विवाह का उल्लेख है। ष्निर्मलाष उपन्यास में अनमेल विवाह और विवाह के साथ ही हमउम्र बेटें की माता का बोझए ष्सेवासदनष में वेश्यावृत्ति के माध्यम से नारी शोषण पर अपनी लेखनी चलाई है।

इसी समय जयशंकर प्रसाद ने भी ध्ुवस्वामिनीष नाटक के माध्यम से पुरूष राजसत्ता के खिलाफ आवाज उठाकर अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए जूझती नारी की ताकत के प्रस्तुत किया।

प्रसाद जी ने ष्ममताष कहानी में कहा है कि ष्हिन्दू विधवा संसार में सबसे तुच्छ निराश्रय प्राणी है। उसकी विडम्बना का कहीं अन्त नहीं।ष11 इसी समय निराला जी ने सरोज स्मृति में अपनी ही बेटी के जीवन को चित्रित करते हुए सामाजिक बुराइयों और स्त्री वेदना को वाणी दी। निराला जी ने अल्काए अप्सराए निरूपमा आदि उपन्यासों में शिक्षित और विदुषी नारियों का चित्रण कर नारी को गुलामी की जंजीरे तोड़ने का संदेश दिया। ष्अल्काष उपन्यास की वीणा विधवा के शापित जीवन पर अपना रोष व्यक्त करती हुई कहती है कि ष्क्या विधवा जैसी दुःखी विधाता की दूसरी भी सृष्टि होगीए भोग.सुख वाले संसार के बीच में रहकर भी भोग सुख से जिसे विरत रहना पड़ता है।ष

© 2014 IJRRA All Rights Reserved

महादेवी वर्मा ने श्रृखला की कड़ियाष के निबंधों में भारतीय स्त्री के संबंध में व्यापक चिंतन कर सामाजिक समस्याओं हर पहलू को उजागर करने का प्रयास किया। महादेवी जी ने नारी के प्रति पुरूष मानसिकता को दर्शाते हुए लिखा. ष्भारतीय पुरूष जैसे अपने मनोरंजन के लिए रंग.बिरंगे पक्षी पाल लेता हैए उपयोग के लिए गाय.घोड़े पाल लेता हैए उसी प्रकार वह स्त्री को भी पालता है तथा अपने पालित पशु.पक्षियों के समान ही उसके शरीर और मन पर अपना अधिकार समझता है।ष13

मध्यकालीन मीरा और आधुनिक कालीन महादेवी दोनों कवयित्री अपनी विरह वेदना को लेकर समान है। इसलिए कई साहित्यकार इन्हें ष्आधुनिक मीराष के नाम से नवाजते हैं।

आधुनिक लेखिकाओं में प्रभाखेतानए क्षमा शर्माए मृणाल पाण्डेए ममता कालियाए कृष्ण सोबतीए मन्नू भंडारीए उषा प्रियवंदाए मृदुला गर्गए चित्रा मुद्गलए नसिरा शर्माए मंजुल भगत आदि विदुषी नारियाँ हैंए जिन्होंने मीरा की तरह निर्भयता का कवच धारण कर नारी जीवन के अनेक प्राणघातक प्रश्नों से जूझने के लिए नारी को प्रेरणा दी। इन कथाकारों ने न केवल पुरूष वर्चस्व के दलदल को खत्म किया बल्कि स्त्री का जुझारू रूप चित्रित कर नारी शोषण करने वाले मर्दों के मुखौटों को उतार कर रख दिया। एक जगह आधुनिक लेखिका क्षमा शर्मा नारी जाति की कठिनाइयों के लिए पुरूष जाति के प्रति गहरा आक्रोश व्यक्त करती हुई कहती हैए ष्यदि वस्त्रविहीन देह स्त्रियों के लिए नग्नता है तो वह पुरूष के लिए पौरूष का प्रतीक कैसे हैद्य चूँकि स्त्री के लिए जीवित रहने के सारे नियम पुरूषों ने ही बनाए हैए इसलिए सारी मर्यादाओं का बोझ औरतों के ऊपर डाल दिया गया है।ष14

ष्सूरजमुखी अँधेरे केष में कृष्णा सोबती का बचपन में बलात्कार जैसी जघन्य समस्या पर हिन्दी में लिखा गया सशक्त उपन्यास हैं ष्कलमुँहीए तू मर क्यों नहीं गईद्य और जिनके लिए सवाल अस्मत का नहींए अस्मिता का है।ष15 मृणाल पाण्डे ने ष्हमको दिया परदेशष उपन्यास में उच्च एवं मध्यम वर्ग की स्त्री की सामाजिक परिस्थिति को नन्हीं लड़की की संवेदनशील दृष्टि से यथातथ्य चित्रित किया है। इनका ष्स्त्रीः देह की राजनीति से देश की राजनीति तकष ;1987द्ध तथा ष्परिधि पर स्त्रीष ;1996द्ध विचारोत्तेजक निबंधों का संकलन है।

आजादी के 70 सालों के बावजूद भी नारी की स्थिति को लेकर जो सीमाएँ पुरूष मानसिकता में घर कर गई हैंए उन सीमाओं को तोड़ते हुए अनेक जुझारू महिलाएँ राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी योग्यताएँ सिद्ध कर रही है। आज राजनीतिए साहित्यए कलाए मनोरंजनए विज्ञान और तकनीकीए सामाजिक और पारिवारिक सभी क्षेत्रों में नारी अपने शक्ति का परिचय देती हुई नई उड़ान भर रही हैं नारी.विमर्श से ही स्त्रियों में स्वायत्तता और आत्म सम्मान की भावना जागी हैए उनमें निर्णय.शक्ति पनपी है। वर्तमान नारी अपने जीवन और अपनी अस्मिता का नियमन स्वयं करना चाहती है।

संदर्भ.ग्रंथ

1ण ष्पहलष .86 .हिन्दू वर्ण व्यवस्था में स्त्रीए ले॰ रामचन्द्र सरोज।

2ण वही

3ण वही

4ण भक्तिकाल में नारी की स्थिति रू भ॰आ॰इ॰ सं॰ सूरज पालीवालए पृण 295

5ण क्बीर ग्रंथावलीए संण श्यामसुन्दर दास

© 2014 IJRRA All Rights Reserved

6ण भक्ति आन्दोलन और सूरदास का काव्यए मैनेजर पांडेयए पृ॰ 26

7ण रामचरित मानस. तुलसीदास

8ण भक्ति आन्दोलन और सूरदस का काव्यए मैनेजर पांडेयए पृ॰ 27

9ण भक्ति काल में नारी की स्थिति रू भ॰आ॰इ॰ सं॰ सूरज पालीवालए पृ॰ 300

10ण वहींए पृ0 . 301

11ण ममताः जयशंकर प्रसाद

12ण रचना कर्मः ए संयुक्तांक. अप्रैल.सितम्बर 2008ए नारी मुक्ति का प्रश्न और निरालाए लेण राहिला रईशए पृण 63

13ण श्रृंखला की कड़ियाँए लेण महादेवी वर्मा

14ण वैचारिकीए जुलाई.सितम्बर 2009ए स्त्री विमर्श और हमको दिया परदेशः डॉ॰ जगतसिंह भाटीए पृण 29

15ण औरत अस्तित्व और अस्मिता ,महिला लेखन का समाजशास्त्रीय अध्ययनद्ध वस्तु से व्यक्ति बनती औरतः . लेण अरविंद जैनए पृण 27

IJRRA

© 2014 IJRRA All Rights Reserved